रमज़ान के फ़ज़ाइल

माहे रमज़ान में आअ्माल ए सालेहा की इस्तेअ्दाद के लिए एक अहम मुख़्तसर तरबियती कोर्स

तालीफ़
अबू ज़ैद ज़मीर

islamiclectures.net | islamicpdfs.net | abuzaidzameer.com

रमज़ान

के

फ़ज़ाएल

अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया:

وَرَغِمَ أَنْفُ رَجُلٍ دَخَلَ عَلَيْهِ رَمَضَانُ

ثُمَّ انْسَلَخَ قَبْلَ أَنْ يُغْفَرَ لَهُ

नाकाम हो गया वो शख़्स जिस पर रमज़ान का महीना आकर चला गया लेकिन वो अपनी मग़फ़िरत नहीं करा सका|

(तिर्मिज़ी, ह़ाकिम) रावी: अबू हुरैराह (स़ह़ीह़ अल जामे 3510) (स़ह़ीह़)

अबू ज़ैद ज़मीर

रमज़ान के महीने में भी महरूम रहने वाले

عَنْ كَعْبِ بْنِ عُجْرَةَ قَالَ:

قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: احْضَرُوا الْمِنْبَرَ، فَحَضَرْنَا فَلَمَّا ارْتَقَى دَرَجَةً قَالَ: آمِينَ فَلَمَّا ارْتَقَى الدَّرَجَةَ الثَّانِيَةَ قَالَ: آمِينَ فَلَمَّا ارْتَقَى الدَّرَجَةَ الثَّالِثَةَ قَالَ: آمِينَ فَلَمَّا نَزَلَ قُلْنَا: يَا رَسُولَ اللَّهِ لَقَدْ سَمِعْنَا مِنْكَ الْيَوْمَ شَيْئًا مَا كُنَّا نَسْمَعُهُ قَالَ: إِنَّ جِبْرِيلَ عَلَيْهِ الصَّلاةُ وَالسَّلامُ عَرَضَ لِي فَقَالَ: بُعْدًا لِمَنْ أَدْرَكَ رَمَضَانَ فَلَمْ يَغْفِرْ لَهُ. قُلْتُ: آمِينَ فَلَمَّا رَقِيتُ الثَّانِيَةَ قَالَ: بُعْدًا لِمَنْ ذُكِرْتُ عِنْدَهُ فَلَمْ يُصَلِّ عَلَيْكَ. قُلْتُ: آمِينَ فَلَمَّا رَقِيتُ الثَّالِثَةَ قَالَ: بُعْدًا لِمَنْ أَدْرَكَ أَبَوَاهُ الْكِبَرَ عِنْدَهُ أَوْ أَحَدُهُمَا فَلَمْ يُدْخِلاهُ الْجَنَّةَ. قُلْتُ: آمِينَ

काअ़ब बिन उजरा رضي الله عنه फ़रमाते हैं: अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया: "मिंम्बर के पास जमा हो जाओ" हम मिंम्बर ले आए, जब आप ने मिंम्बर के पहले ज़ीने पर क़दम रखा तो कहा: "आमीन" फ़िर दूसरे ज़ीने पर क़दम रखा तो कहा: "आमीन" फिर तीसरे ज़ीने पर क़दम रखा तो कहा: "आमीन" फिर जब आप नीचे उतरे तो हम ने पूछा: ऐ अल्लाह के रसूल! हमने आज आप से एक ऐसी बात सुनी जो इस से पहले कभी नहीं सुनी? आप ने फ़रमाया: जिब्रील عليه السلام मेरे पास आए और कहा: दूरी हो उस के लिए जिस ने रमज़ान का महीना पाया लेकिन फिर भी उस की मग़फ़िरत नहीं हुई मैं ने कहा: "आमीन", जब मैं ने दूसरे ज़ीने पर क़दम रखा तो उन्होंने कहा: दूरी हो उस के लिए जिस के सामने आप का ज़िक्र हुआ और वो आप पर दरूद नहीं भेजा, मैं ने कहा: "आमीन", फिर जब मैं ने तीसरे ज़ीने पर क़दम रखा तो उन्होंने कहा: दूरी हो उस के लिए जिस ने अपने वालिदैन में से दोनों को या उन में से किसी एक को बुढ़ापे की हालत में पाया और उन के बाइस वो जन्नत में दाख़िल ना हुवा, मैं ने कहा: "आमीन" |

(हाकिम) [सहीह़ अत्तर्ग़ीब 995] (सहीह़ लिग़ैरिही)

1. रमज़ान के महीने के फ़ज़ाइल

1. रमज़ान बरकतों वाला महीना है

अल्लाह के रसूलﷺ ने फ़रमाया:

أَتَاكُمْ رَمَضَانُ شَهْرٌ مُبَارَكٌ...

तुम पर रमज़ान आया है जो एक मुबारक महीना है|
(मुसनद अहमद, नसाई, बैहक़ी फ़ि शोअ़बिल ईमान) रावी: अबू हुरैराह
[सहीह अल जामे 55] (सहीह)

2. रमज़ान कुरआन के नुज़ूल का महीना है

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيَ أُنزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ
هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ مِّنَ الْهُدَى وَالْفُرْقَانِ

रमज़ान वो महीना है जिस में कुरआन नाज़िल हुवा, जो लोगों के लिए हिदायत है और जिस में हिदायत के लिए और हक़ व बतिल में फ़र्क़ करने के लिए नशानियां हैं| (सूरह अल बक़रा 185)

3. रमज़ान गुनाहों के कफ्फ़ारे का सबब है

अल्लाह के रसूलﷺ ने फ़रमाया:

الصَّلَوَاتُ الْخَمْسُ وَالْجُمْعَةُ إِلَى الْجُمْعَةِ وَرَمَضَانُ إِلَى رَمَضَانَ
مُكَفِّرَاتٌ مَا بَيْنَهُنَّ إِذَا اجْتَنَبَ الْكَبَائِرَ

पांच नमाज़ें और एक जुमुआ़ दूसरे जुमुआ़ तक, और एक रमज़ान दूसरे रमज़ान तक होने वाली ख़ताओ का कफ़्फ़ारा बन जाता है जब कि आदमी कबीरा गुनाहों से बचता रहे|
(मुस्लिम: अत्तहारा 344) रावी: अबू हुरैराह

4. रमज़ान के महीने में सर्कश[1] शयातीन क़ैद कर दिये जाते हैं

अल्लाह के रसूलﷺ ने फ़रमाया:

إِذَا كَانَ أَوَّلُ لَيْلَةٍ مِنْ رَمَضَانَ صُفِّدَتِ الشَّيَاطِينُ مَرَدَةُ الْجِنِّ

وَغُلِّقَتْ أَبْوَابُ النَّارِ فَلَمْ يُفْتَحْ مِنْهَا بَابٌ (٢)

وَفُتِّحَتْ أَبْوَابُ الْجِنَانِ فَلَمْ يُغْلَقْ مِنْهَا بَابٌ

وَنَادَى مُنَادٍ : يَا بَاغِيَ الْخَيْرِ أَقْبِلْ وَيَا بَاغِيَ الشَّرِّ أَقْصِرْ وَلِلَّهِ عُتَقَاءُ مِنَ النَّارِ

जब रमज़ान की पहली रात होती है तो जिनों में से सर्कश शयातीन को ज़न्जीरों में जकड़ दिया जाता है, जहन्नम के दरवाज़े बंद किये जाते हैं, (महीना भर) उस का कोई दरवाज़ा नहीं खुलता और जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं (महीना भर) उस का कोई दरवाज़ा बंद नहीं किया जाता, एक निदा लगाने वाला निदा लगाता है: ऐ ख़ैर के तलब करने वाले, आगे बढ़ और ऐ शर का इरादा करने वाले, रुक जा, और अल्लाह कुछ लोगों को जहन्नम से आज़ाद कर देता है|

(तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, इब्ने हिब्बान, हाकिम, बैहक़ी) रावी: अबू हुरैराह

[सहीह अल जामे 759] (हसन) अल्फ़ाज़ इब्ने खुज़ैमा के हैं इसी तरह इख़्तिसार के साथ बुख़ारी व मुस्लिम में है|

नसाई के अल्फ़ाज़ हैं:

وَتُغَلُّ فِيهِ مَرَدَةُ الشَّيَاطِينِ

और इस (महीने) में सर्कश शयातीन को क़ैद किया जाता है[3]|

[नसाई: बितहक़ीक़िल अलबानी 2106] रावी: अबू हुरैराह (सहीह)

---

[1] عن أبي سعد الخدري ﷺ: اعْتَكَفَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ الْعَشْرَ الْأَوْسَطَ مِنْ رَمَضَانَ يَلْتَمِسُ لَيْلَةَ الْقَدْرِ قَبْلَ أَنْ تُبَانَ لَهُ فَلَمَّا انْقَضَيْنَ أَمَرَ بِالْبِنَاءِ فَقُوِّضَ ثُمَّ أُبِينَتْ لَهُ أَنَّهَا فِي الْعَشْرِ الْأَوَاخِرِ فَأَمَرَ بِالْبِنَاءِ فَأُعِيدَ ثُمَّ خَرَجَ عَلَى النَّاسِ فَقَالَ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّهَا كَانَتْ أُبِينَتْ لِي لَيْلَةُ الْقَدْرِ وَإِنِّي خَرَجْتُ لِأُخْبِرَكُمْ بِهَا فَجَاءَ رَجُلَانِ يَحْتَقَّانِ مَعَهُمَا الشَّيْطَانُ فَنُسِّيتُهَا [خ: الصيام ١٩٩٦]

[2] إِذَا دَخَلَ رَمَضَانُ فُتِّحَتْ أَبْوَابُ الجَنَّةِ، وَغُلِّقَتْ أَبْوَابُ جَهَنَّمَ وَسُلْسِلَتِ الشَّيَاطِينُ.

[خ: بدء الخلق ٣٢٧٧ – م: الصيام ١ – (١٠٧٩)] عن أبي هريرة.

[3] इसी लिए इब्ने खुज़ैमा रहिमहुल्लाह फ़रमाते हैं:

إِنَّمَا أَرَادَ بِقَولِهِ ((صُفِّدَتِ الشَّيَاطِينُ)) : مَرَدَةَ الجِنِّ مِنْهُم لَا جَمِيْعَ الشَّيَاطِينِ إِذَا اسْمُ الشَّيَاطِينِ قَدْ يَقَعُ عَلَى بَعْضِهِمْ

[صحيح ابن خزيمة: ج٣ ص١٨٨]

आपﷺ के इस फ़रमान "शयतान क़ैद किए जाते है" से मुराद वो जिन हैं जो सर्कश होते हैं ना कि तमाम शयातीन को, इस लिए कि शैतान नाम का इत्लाक़ बाज़ जिनों पर भी होता है| (सहीह इब्ने खुज़ैमा: ज.3 स. 188)

2. रोज़े के फ़ज़ाइल

1. रोज़े की तरह कोई अमल नहीं

عَنْ أَبِي أُمَامَةَ قَالَ:

أَتَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فَقُلْتُ: مُرْنِي بِأَمْرٍ آخُذُهُ عَنْكَ

قَالَ: عَلَيْكَ بِالصَّوْمِ فَإِنَّهُ لَا مِثْلَ لَهُ

अबू उमामा رضي الله عنه से रिवायत है, फ़रमाते हैं:
मैं ने कहा: (ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ,) मुझे कोई हुक्म दीजिए कि मैं (बराहे रास्त उसे) आप से अख़ज़ करूं| आप ने फ़रमाया: रोज़े का एहतेमाम करो क्यूंकि रोज़े की तरह और कोई अमल नहीं|
(मुसनद अहमद, नसाई, इब्ने हिब्बान, हाकिम) रावी: अबू उमामा
[सहीह अल जामे 4044] (सहीह)

2. रोज़ा मग़फ़िरत का ज़रिया है

अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया:

مَنْ صَامَ رَمَضَانَ إِيمَانًا وَاحْتِسَابًا [1] غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ

जिस ने ईमान और सवाब की निय्यत से रमज़ान के रोज़े रखे उस के पिछले सारे गुनाह मुआफ़ कर दिये जाते हैं|
(बुख़ारी: अल ईमान 38, मुस्लिम: सलातुल मुसाफ़िरीन व क़सरिहा 1268) रावी: अबू हुरैराह

[1] قال الخطابي: احتساباً أي نية وعزيمة وهو أن يصومه على معنى الرغبة في ثوابه طيبة نفسه بذلك غير كاره له ولا مستثقل لصيامه ولا مستطيل لأيامه ولكن يغتنم طول أيامه لعظم الثواب. [مرعاة المفاتيح (٦/ ٤٠٤)]

3. रोज़ा जहन्नम से आज़ादी का सबब है

अल्लाह के रसूलﷺ ने फ़रमाया:

إِنَّ لِلَّهِ عِنْدَ كُلِّ فِطْرٍ عُتَقَاءَ وَذَلِكَ فِي كُلِّ لَيْلَةٍ

अल्लाह तआ़ला हर इफ़्तार के वक़्त जहन्नम से कुछ लोगों को आज़ाद करता है और ये (रमज़ान की) हर रात होता है|
(इब्ने माजा) रावी: जाबिर (मुस्न्द अह़मद, त़बरानी, इब्ने माजा) रावी: अबू उमामा
[स़ह़ीह़ अल जामे 2170] (ह़सन)

4. रोज़ा जहन्नम से ढाल है

अल्लाह के रसूलﷺ ने फ़रमाया:

الصَّوْمُ جُنَّةٌ يُسْتَجِنُّ بِهَا الْعَبْدُ مِنَ النَّارِ

रोज़ा ढाल है जिस के ज़रिये बंदा जहन्नम से अपनी ह़िफ़ाज़त करता है[1]|
(त़बरानी) रावी: उस्मान बिन अबिल आस़ [स़ह़ीह़ अल जामे 3867] (ह़सन)

अल्लाह के रसूलﷺ ने फ़रमाया:

الصِّيَامُ جُنَّةٌ وَحِصْنٌ حَصِينٌ مِنَ النَّارِ

रोज़ा ढाल है और जहन्नम से बचाव के लिए एक मज़बूत क़िला है|
(मुस्नद अह़मद, शोअ़बिल ईमान लिल बैहक़ी) रावी: अबू हुरैराह
[स़ह़ीह़ अल जामे 3880] (ह़सन)

[1]मुनावी फ़रमाते हैं:
وقاية في الدنيا من المعاصي بكسر الشهوة وحفظ الجوارح وفي الآخرة من النار [فيض القدير : ٣٨٦٥]
बचाव से दुनिया में नाफ़रमानियां से ह़िफ़ाज़त जैसे शहवतों को काटना और आ़ज़ा की गुनाहों से ह़िफ़ाज़त करना और आख़िरत में जहन्नम से ह़िफ़ाज़त मुराद है| (फ़ैज़ुल क़दिर ३८६५)

5. रोज़ा नफ़्स की बीमारियों का इलाज और तक़्वा[1] का सबब है

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ
كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ

ऐ ईमान वालो! तुम पर रोज़े फ़र्ज़ कर दिए गए वैसे ही जैसे तुम से पहले लोगों पर फ़र्ज़ किए गए थे, ताकि तुम तक़्वा की राह इख़्तियार करो|
(सूरह अल बक़्रा 183)

अल्लाह के रसूलﷺ ने फ़रमाया:

صَوْمُ شهرِ الصبرِ وثَلاثَةِ أَيَّامٍ مِنْ كُلِّ شَهْرٍ يُذْهِبْنَ وَحَرَ الصَّدْرِ (٢)

सब्र के महीने (रमज़ान) के रोज़े और हर माह के तीन रोज़े सीने में मौजूद ख़राबियों को निकाल देते हैं|
(अल बज़्ज़ार) रावी: अली और अ़ब्बास
(अल बग़वी, अल बावरदी, त़बरानी) रावी: नम्र बिन तौलिब
[स़हीह़ अल जामे 3804] (स़हीह़)

[1] قوله (وَحَرَ الصَّدْرِ):بالتحريك غِشُّه ووساوسه وقيل الحقد والغيظ وقيل العداوة [لسان العرب وَحَرَ]

6. इख़्लास़ के साथ रोज़ा रखने वाले की फ़ज़ीलत

अल्लाह के रसूलﷺ ने फ़रमाया:

يَقُولُ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ: الصَّوْمُ لِي وَأَنَا أَجْزِي بِهِ

يَدَعُ شَهْوَتَهُ وَأَكْلَهُ وَشُرْبَهُ مِنْ أَجْلِي وَالصَّوْمُ جُنَّةٌ [1]

وَلِلصَّائِمِ فَرْحَتَانِ: فَرْحَةٌ حِينَ يُفْطِرُ وَفَرْحَةٌ حِينَ يَلْقَى رَبَّهُ

وَلَخُلُوفُ فَمِ الصَّائِمِ أَطْيَبُ عِنْدَ اللَّهِ مِنْ رِيحِ المِسْكِ

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है: रोज़ा मेरे लिए है और मैं ही उस का बदला दूंगा (क्यूंकि) रोज़ादार मेरी ही ख़ातिर अपनी शहवत, अपना खाना पीना छोड़ता है| और रोज़ादार के लिए दो खुशियां हैं, एक खूशी इफ़्तार के वक़्त और एक खुशी उस वक़्त जब वो अपने रब से मिलेगा| और रोज़ादार के मुंह की बदबू अल्लाह के नज़दीक मुश्क की खूश्बू से भी ज़ियादा उमदा है|

(बुख़ारी अत्तौहीद 7492, मुस्लिम: अस्सियाम 1946) रावी: अबू हुरैराह

[1] الصَّوْمُ جُنَّةٌ مِنْ عَذَابِ اللهِ (هب) عَن عثمان بن أبي العاص. [صحيح الجامع ٣٨٦٦] (صحيح)

7. सहरी की फ़ज़ीलत

अल्लाह के रसूलﷺ ने फ़रमाया:

تَسَحَّرُوا فَإِنَّ فِي السَّحُورِ بَرَكَةً

सहरी किया करो इस लिए कि सहरी में बरक़त रखी गई है|
(बुख़ारी अस्सोम 1923, मुस्लिम: अस्सियाम 1835) रावी: अनस

अल्लाह के रसूलﷺ ने फ़रमाया:

السَّحُورُ أَكْلُهُ بَرَكَةٌ فَلاَ تَدَعُوهُ وَلَوْ أَنْ يَجْرَعَ أَحَدُكُمْ جَرْعَةً مِنْ مَاءٍ [1]

فَإِنَّ اللهَ وَمَلاَئِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى المُتَسَحِّرِينَ [2]

सहरी खाना बरक़त है, लिहाज़ा उसे ना छोड़ो चाहे पानी का एक घूंट ही पी लो,इस लिए कि अल्लाह और उसके फ़रिश्ते सहरी करने वालों पर सलात भेजते हैं |
(मुसनद अहमद) रावी: अबू सईद [सहीह अल जामे 3683] (सहीह)

8. रोज़े में भूल कर कुछ खा पी लेने वाले पर कोई गुनाह नहीं

अल्लाह के रसूलﷺ ने फ़रमाया:

مَنْ أَكَلَ نَاسِيًا [3] **وَهُوَ صَائِمٌ فَلْيُتِمَّ صَوْمَهُ فَإِنَّمَا أَطْعَمَهُ اللَّهُ وَسَقَاهُ**

जिस ने भूल कर रोज़े की हालत में कुछ खा पी लिया तो अपना रोज़ा पूरा करे क्यूंकि उसे तो अल्लाह ने खिलाया पिलाया है|
(बुख़ारी: किताबुल ईमान वन्नुज़ुर 6669, मुस्लिम: अस्सियाम 171-(1155)) रावी: अबू हुरैराह

---

1 قال ﷺ: إنّ السُّحُورَ بَرَكَةٌ أعْطاكُمُوها الله، فَلَا تَدَعُوها (حم ن) عن رجل. [صحيح الجامع ١٦٣٦] (صحيح)

2 قال ﷺ: إن الله تعالى وملائِكَتَهُ يُصَلُّونَ على المَتسحِّرينَ (حب طس حل) عن ابن عمر. [صحيح الجامع ١٨٤٤] (حسن)

3 قال ﷺ: بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ إِذْ أَتَانِي رَجُلانِ فَأَخَذَا بِضَبْعَيَّ فَأَتَيَا بِي جَبَلا ... ثُمَّ انْطَلَقَا بِي فَإِذَا أَنَا بِقَوْمٍ مُعَلَّقِينَ بِعَرَاقِيبِهِمْ مُشَقَّقَةٍ أَشْدَاقُهُمْ تَسِيلُ أَشْدَاقُهُمْ دَمًا قَالَ: قُلْتُ: مَنْ هَؤُلاءِ؟ قَالَ: هَؤُلاءِ الَّذِينَ يُفْطِرُونَ قَبْلَ تَحِلَّةِ صَوْمِهِمْ (ابن خزيمة حب النسائي في الكبرى) عن أبي أمامة الباهلي. [صحيح الترغيب ١٠٠٥] (صحيح)

9. उस शख़्स की फ़ज़ीलत जिस का ख़ात्मा रोज़े पर हो

अल्लाह के रसूलﷺ ने फ़रमाया:

مَنْ خُتِمَ لَهُ بِصِيَامِ يَوْمٍ دَخَلَ الجَنَّةَ [1]

जिस का ख़ात्मा किसी दिन के रोज़े पर हो वो जन्नत में दाख़िल होगा|
(अल बज़्ज़ार) रावी: हुज़ैफ़ा [सहीह अल जामे 6224] (सहीह)

10. रोज़ादार बाबे रय्यान से जन्नत में दाख़िल होंगे

अल्लाह के रसूलﷺ ने फ़रमाया:

إِنَّ فِي الجَنَّةِ بَابًا يُقَالُ لَهُ الرَّيَّانُ يَدْخُلُ مِنْهُ الصَّائِمُونَ يَوْمَ القِيَامَةِ
لاَ يَدْخُلُ مِنْهُ أَحَدٌ غَيْرُهُمْ يُقَالُ: أَيْنَ الصَّائِمُونَ؟ فَيَقُومُونَ
لاَ يَدْخُلُ مِنْهُ أَحَدٌ غَيْرُهُمْ فَإِذَا دَخَلُوا أُغْلِقَ فَلَمْ يَدْخُلْ مِنْهُ أَحَدٌ

जन्नत में एक दरवाज़ा "रय्यान" है जिस से क़ियामत के दिन रोज़ादार दाख़िल होंगे, उन के सिवा उस से कोई दाख़िल नहीं होगा| कहा जाएगा: कहां हैं रोज़ेदार? वो खड़े होंगे और उस से दाख़िल हो जाएंगे, उन के दाख़िल होने के बाद दरवाज़ा बंद कर दिया जाएगा फिर उस दरवाज़े से कोई दाख़िल ना होगा|
(बुख़ारी: अस्सौम 1896, मुस्लिम: अस्सियाम 1947) रावी: सहल बिन सअ्द

[1] قال المناوي: (من ختم له بصيام يوم) أي من ختم عمره بصيام يوم بأن مات وهو صائم أو بعد فطره من صومه (دخل الجنة) أي مع السابقين الأولين أو من غير سبق عذاب [فيض القدير (٦/ ١٢٣)]

3. क़ियाम ए रमज़ान के फ़ज़ाइल

1. क़ियाम ए रमज़ान की फ़ज़ीलत

अल्लाह के रसूलﷺ ने फ़रमाया:

مَنْ قَامَ رَمَضَانَ إِيمَانًا وَاحْتِسَابًا غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ

जिस ने ईमान और सवाब की निय्यत से रमज़ान का क़ियाम किया उस के पिछले सारे गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएंगे|

(बुख़ारी: सलातुत्तरावीह 2009, मुस्लिम: सलातुल मुसाफ़िरीन व क़सरिहा 1267) अल्फ़ाज़ मुस्लिम के हैं|

2. रमज़ान में इमाम के साथ क़ियामे रमज़ान की फ़ज़ीलत

अल्लाह के रसूलﷺ ने फ़रमाया:

إِنَّهُ مَنْ قَامَ مَعَ الْإِمَامِ حَتَّى يَنْصَرِفَ كُتِبَ لَهُ قِيَامُ لَيْلَةٍ [1]

जो इमाम के साथ नमाज़ पढे यहां तक कि इमाम नमाज़ पूरी कर ले, उस के लिए पूरी रात क़ियाम का सवाब लिखा जाता है|

(तिर्मिज़ी) रावी: अबू ज़र

[सुनन अत्तिर्मिज़ी बि तह़क़ीक़िल अलबानी 806, अल इरवा ज.2 स. 193] (सह़ीह़)

---

1 عَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ

صُمْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَلَمْ يُصَلِّ بِنَا حَتَّى بَقِيَ سَبْعٌ مِنْ الشَّهْرِ فَقَامَ بِنَا حَتَّى ذَهَبَ ثُلُثُ اللَّيْلِ ثُمَّ لَمْ يَقُمْ بِنَا فِي السَّادِسَةِ وَقَامَ بِنَا فِي الْخَامِسَةِ حَتَّى ذَهَبَ شَطْرُ اللَّيْلِ فَقُلْنَا لَهُ يَا رَسُولَ اللَّهِ لَوْ نَفَّلْتَنَا بَقِيَّةَ لَيْلَتِنَا هَذِهِ فَقَالَ إِنَّهُ مَنْ قَامَ مَعَ الْإِمَامِ حَتَّى يَنْصَرِفَ كُتِبَ لَهُ قِيَامُ لَيْلَةٍ ثُمَّ لَمْ يُصَلِّ بِنَا حَتَّى بَقِيَ ثَلَاثٌ مِنْ الشَّهْرِ وَصَلَّى بِنَا فِي الثَّالِثَةِ وَدَعَا أَهْلَهُ وَنِسَاءَهُ فَقَامَ بِنَا حَتَّى تَخَوَّفْنَا الْفَلَاحَ قُلْتُ لَهُ: وَمَا الْفَلَاحُ؟ قَالَ: السُّحُورُ. (د ت ن ه وغيرهم)

واللفظ للترمذي [سنن الترمذي بتحقيق الألباني ٨٠٦ – الإرواء ج٢ ص١٩٣] (صحيح)

قال الألباني رحمه الله : والشاهد من الحديث قوله: ((من قام مع الإمام. . .)) فإنه ظاهر الدلالة على فضيلة صلاة قيام رمضان مع الإمام [صلاة التراويح للألباني (ص: ١٥)]

3. क़ियामे रमज़ान का एहतेमाम करने की फ़ज़ीलत

عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ الْجُهَنِيِّ قَالَ:
جَاءَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ رَجُلٌ مِنْ قُضَاعَةَ فَقَالَ لَهُ:
يَا رَسُولَ اللَّهِ أَرَأَيْتَ إِنْ شَهِدْتُ أَنْ لا إِلَهَ إِلا اللَّهُ وَأَنَّكَ رَسُولُ اللَّهِ
وَصَلَّيْتُ الصَّلَوَاتِ الْخَمْسَ وَصُمْتُ الشَّهْرَ وَقُمْتُ رَمَضَانَ وَآتَيْتُ الزَّكَاةَ
فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: مَنْ مَاتَ عَلَى هَذَا كَانَ مِنَ الصِّدِّيقِينَ وَالشُّهَدَاءِ

अम्र बिन मुर्रा अल जुहनी رضي الله عنه फ़रमाते हैं:
कुज़ाआह क़बीले से एक शख़्स अल्लाह के रसूल ﷺ के पास आया और आप से कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! भला बतलाइये अगर मैं गवाही दूं कि अल्लाह के सिवा कोई माअ़बूद बरह़क़ नहीं और आप अल्लाह के रसूल हैं, पांच वक़्त की नमाज़ें भी पढ़ूं, रमज़ान के रोज़े भी रखूं और क़ियामे रमज़ान का भी एहतेमाम करूं और ज़कात भी दूं (तो उस पर मुझे क्या मिलेगा?) नबी ﷺ ने जवाब दिया जिसका ख़ातिमा इस अ़मल पर हो वो सिद्दीक़ीन और शुहदा में होगा|
(इब्ने ख़ुज़ैमा, अल बज़्ज़ार, इब्ने ह़िब्बान) अल्फ़ाज़ इब्ने ख़ुज़ैमा के हैं|
[सह़ीह़ इब्ने ख़ुज़ैमा 2212, सह़ीह़ अत्तर्ग़ीब 1003] (ह़सन)

4. रमज़ान में तिलावते कुरआन के फ़ज़ाइल

1. क़ियामत के दिन रोज़ा और कुरआन सिफ़ारिश करेंगे

अल्लाह के रसूलﷺ ने फ़रमाया:

الصِّيَامُ وَالْقُرْآنُ يَشْفَعَانِ لِلْعَبْدِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

يَقُولُ الصِّيَامُ: أيْ رَبِّ إِنِّي مَنَعْتُهُ الطَّعَامَ وَالشَّهَوَاتِ بِالنَّهَارِ فَشَفِّعْنِي فِيهِ

يَقُولُ الْقُرْآنُ: رَبِّ مَنَعْتُهُ النَّوْمَ بِاللَّيْلِ فَشَفِّعْنِي فِيهِ، فَيُشَفَّعَانِ

रोज़ा और कुरआन क़ियामत के दिन बन्दे के लिए सिफ़ारिश करेंगे| रोज़ा कहेगा: ऐ रब, मैं ने इस बंन्दे को दिन में खाने और शहवतों से रोके रखा लिहाज़ा इस के हक़ में मेरी सिफ़ारिश क़बूल फ़रमा| कुरआन कहेगा: ऐ मेरे रब, मैं ने इसे रात में नींद से दूर रखा लिहाज़ा इस के हक़ में मेरी सिफ़ारिश क़बूल फ़रमा| इस पर उन दोनों की सिफ़ारिश क़बूल कर ली जाएगी|

(मुसनद अहमद, तबरानी, हाकिम, शोअबुल ईमान लिल बैहक़ी) रावी: इब्ने अम्र [सहीह अल जामे 3882] (सहीह)

2. नबीﷺ का रमज़ान की रातों में कुरआन की तिलावत व मुदारसत[1] करना

अल्लाह के रसूलﷺ ने फ़रमाया:

إِنَّ جِبْرِيلَ كَانَ يُعَارِضُنِي الْقُرْآنَ كُلَّ سَنَةٍ مَرَّةً

وَإِنَّهُ عَارَضَنِي العَامَ مَرَّتَيْنِ وَلاَ أُرَاهُ إِلَّا حَضَرَ أَجَلِي

जिब्रील हर साल मेरे साथ एक मर्तबा कुरआन का दौर किया करते थे, इस साल उन्होंने दो मर्तबा मेरे साथ कुरआन का दौर किया, मैं समझता हूं कि अब मेरी वफ़ात का वक़्त आ गया है|

(बुख़ारी: अल मनाक़िब 3624, मुस्लिम: फ़ज़ाइलुस्सहाबा 4487) रावियाः आइशा

---

[1] قال ابن رجب : ودل الحديث أيضا {أي حديث ابن عباس [خ: الصوم ١٩٠٢ – م: الفضائل ٤٢٦٨] } على استحباب دراسة القرآن في رمضان والإجتماع على ذلك وعرض القرآن على من هو أحفظ له وفيه دليل على استحباب الإكثار من تلاوة القرآن في شهر رمضان [لطائف المعارف لابن رجب (ص: ١٦٩)]

5. रमज़ान में दुआ के फ़ज़ाइल

1. रोज़ादार की दुआ क़बूल होती है

अल्लाह के रसूलﷺ ने फ़रमाया:

ثَلَاثُ دَعَوَاتٍ مُسْتَجَابَاتٌ:

دَعْوَةُ الصَّائِمِ وَدَعْوَةُ الْمَظْلُومِ وَدَعْوَةُ الْمُسَافِرِ

तीन दुआएं क़बूल की जाती हैं, रोज़ादार की दुआ, मज़्लूम की दुआ और मुसाफ़िर की दुआ |

(अल उकैली फ़ी अज़्ज़ोअ़फ़ा, अल बैहक़ी फ़ी शोअ़बिल ईमान) रावी: अबू हुरैराह
[सहीह़ अल जामे 3030] (सहीह़)

2. रोज़े की फ़र्ज़िय्यत के बाद फ़ौरी तौ़र पर दुआ की क़बूलियत का तज़्किरा!

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया[1]:

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ
فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ

और जब मेरे बंन्दे आप से मेरे बारे में पूछें तो आप कहिये कि मैं तो क़रीब हूं, पुकारने वाले की पुकार सुनता हूं जब भी वो पुकारे| लिहाज़ा उन्हें भी चाहिये कि वो मेरी बात मानें और मुझ पर ईमान रखें ताकि हिदायत पाएं|
(सूरह अल बक़रा 186)

---

[١] قال تعالى :
شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنْزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ هُدًى لِلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ مِنَ الْهُدَى وَالْفُرْقَانِ
فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ وَمَنْ كَانَ مَرِيضًا أَوْ عَلَى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِنْ أَيَّامٍ أُخَرَ
يُرِيدُ اللَّهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَى مَا هَدَاكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ
وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ [البقرة: ١٨٥، ١٨٦]

6. रमज़ान में सख़ावत के फ़ज़ाइल

1. नबीﷺ का रमज़ान में सख़ावत में बढ़ जाना

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ:

كَانَ النَّبِيُّ ﷺ أَجْوَدَ النَّاسِ بِالخَيْرِ

وَكَانَ أَجْوَدُ مَا يَكُونُ فِي رَمَضَانَ [1] حِينَ يَلْقَاهُ جِبْرِيلُ

وَكَانَ جِبْرِيلُ عليه السلام يَلْقَاهُ كُلَّ لَيْلَةٍ فِي رَمَضَانَ حَتَّى يَنْسَلِخَ

يَعْرِضُ عَلَيْهِ النَّبِيُّ ﷺ القُرْآنَ

فَإِذَا لَقِيَهُ جِبْرِيلُ عليه السلام كَانَ أَجْوَدَ بِالخَيْرِ مِنَ الرِّيحِ المُرْسَلَةِ

इब्ने अ़ब्बास رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि अल्लाह के नबीﷺ लोगों में सब से ज़ियादा सख़ी थे और आप की सख़ावत उस वक़्त बढ़ जाती जब आप रमज़ान में जिबरील से मिला करते, और जिबरील रमज़ान में हर रात आप से मुलाक़ात किया करते यहां तक कि महीना ख़त्म हो जाता| अल्लाह के नबीﷺ जिब्रील को कुरआन सुनाया करते थे, पस जब आप जिब्रील से मिलते तो आप की सख़ावत तेज़ हवा से भी ज़ियादा बढ़ जाती| (बुख़ारी: अस्सौम 1902, मुस्लिम: अल फ़ज़ाइल 4268)

2. रोज़ादार को इफ़्तार कराने की फ़ज़ीलत

अल्लाह के रसूलﷺ ने फ़रमाया:

مَنْ فَطَّرَ صَائِماً كَانَ لَهُ مِثْلُ أَجْرِهِ غَيْرَ أَنَّهُ لاَ يَنْقُصُ مِنْ أَجْرِ الصَّائِمِ شيئا

जो किसी रोज़ादार को इफ़्तार कराए उस के लिए उस रोज़ादार के मिस्ल सवाब है लेकिन उस रोज़ादार के सवाब में कोई कमी नहीं की जाएगी|
(मुसनद अह़मद, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, इब्ने हिब्बान) रावी: ज़ैद बिन ख़ालिद
[सह़ीह़ अल जामे 6415] (सह़ीह़)

[1] قال ابن رجب : قال الشافعي رحمه الله: أحب للرجل الزيادة في الجود في شهر رمضان اقتداء برسول الله ﷺ ولحاجة الناس فيه إلى مصالحهم ولتشاغل كثير منهم بالصوم والصلاة عن مكاسبهم وكذا قال القاضي أبو يعلى وغيره من أصحابنا أيضا [لطائف المعارف (ص: ١٦٩)]

7. रमज़ान में उमरा करने की फ़ज़ीलत

अल्लाह के रसूलﷺ ने अन्सार की एक औरत (उम्मे सिनान) से फ़रमाया:

فَإِذَا كَانَ رَمَضَانُ اعْتَمِرِي فِيهِ فَإِنَّ عُمْرَةً فِي رَمَضَانَ حَجَّةٌ

وفي رواية : ((فَإِنَّ عُمْرَةً فِي رَمَضَانَ تَقْضِي حَجَّةً أَوْ حَجَّةً مَعِي)) [1]

जब रमज़ान आ जाए तो उस में उमरा करना इस लिए कि रमज़ान में उमरा ह़ज के बराबर होता है|

एक और रिवायत में है कि "मेरे साथ ह़ज के बराबर है"

[बुख़ारी: अल ह़ज 1782, मुस्लिम: अल ह़ज 221-(1256)] रावी: इब्ने अ़ब्बास

[1] [خ: الحج ١٨٦٣ – م: الحج ٢٢٢ - (١٢٥٦)]

8. लैलतुल क़द्र के फ़ज़ाइल

1. लैलतुल क़द्र की फ़ज़ीलत कुरआन में

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया:

إِنَّا أَنزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ وَمَا أَدْرَاكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ.

لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ أَلْفِ.

شَهْرٍ تَنَزَّلُ الْمَلائِكَةُ وَالرُّوحُ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِم مِّن كُلِّ أَمْرٍ

سَلامٌ هِيَ حَتَّى مَطْلَعِ الْفَجْرِ

यक़ीनन हम ने इस (कुरआन) को लैलतुल क़द्र में नाज़िल किय है, और तुम्हें क्या मालूम लैलतुल क़द्र क्या है! लैलतुल क़द्र एक हज़ार महीनों से बेहतर है| इस (रात) में फ़रिश्ते और रूह (यानी जिब्रील) अपने रब के हुक्म से हर फ़ैस़ले के साथ नाज़िल होते हैं| ये रात सरासर सलामती है, यहां तक कि तुलूए़ फज्र हो जाए| (सूरह अल क़द्र)

2. लैलतुल क़द्र की फ़ज़ीलत ह़दीस में

عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ

دَخَلَ رَمَضَانُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ

إِنَّ هَذَا الشَّهْرَ قَدْ حَضَرَكُمْ وَفِيهِ لَيْلَةٌ خَيْرٌ مِنْ أَلْفِ شَهْرٍ

مَنْ حُرِمَهَا فَقَدْ حُرِمَ الْخَيْرَ كُلَّهُ وَلَا يُحْرَمُ خَيْرَهَا إِلَّا مَحْرُومٌ

अनस बिन मालिक ﷺ फ़रमाते हैं:

जब रमज़ान आया तो अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया: ये महीना तुम्हारे सामने है | इस में एक रात है जो हज़ार महीनों से बेहतर है | जो इस से महरूम रहा वो पूरी ख़ैर से महरूम रहा | और इस ख़ैर से सिर्फ़ वही महरूम होगा जो वाक़ई महरूम हो|

(इब्ने माजा) रावी अनस (सह़ीह़ अल जामे 2247) (ह़सन)

इसी के क़रीब अलफ़ाज़ में (मुसनद अहमद, नसाई और बैहक़ी फ़ी शुअबिल ईमान) में है|

रावी: अबू हुरैराह [सह़ीह़ अल जामे 55] (सह़ीह़)

3. लैलतुल क़द्र में क़ियाम की फ़ज़ीलत

अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया:

مَنْ قَامَ لَيْلَةَ الْقَدْرِ إِيمَانًا وَاحْتِسَابًا غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ

जिस ने ईमान और सवाब की नियत से शबे क़द्र में क़ियाम किया उस के पिछले तमाम गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं|

(बुख़ारी: अस्सौम 1901, मुस्लिम: सलातुल मुसाफ़िरीन व क़सुरुहा 1268) रावी: अबू हुरैराह

9. रमज़ान मे एतेकाफ़ के फ़ज़ाइल

1. इब्राहीम(अलैहिस्सलाम) को एतेकाफ़ करने वालों के लिए बैतुल्लाह को पाक साफ़ रखने का हुक्म

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया:

وَعَهِدْنَا إِلَى إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ

أَنْ طَهِّرَا بَيْتِيَ لِلطَّائِفِينَ وَالْعَاكِفِينَ وَالرُّكَّعِ السُّجُودِ

और हम ने इब्राहीम और इस्माईल (अ़लैहिमस्सलाम) को हुक्म दिया कि तुम मेरे घर को त़वाफ़ करने वालों और एतेकाफ़ करने वालों और रुकूअ़ और सजदे करने वालों के लिए पाक साफ़ करो| (सूरह अल बक़रा 125)

2. नबीﷺ का हर रमज़ान में दस दिन एतेकाफ़ फ़रमाना

عَنْ أَبِي هريرة ﷺ قَالَ:

كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَعْتَكِفُ فِي كُلِّ رَمَضَانٍ عَشَرَةَ أَيَّامٍ

فَلَمَّا كَانَ العَامُ الَّذِي قُبِضَ فِيهِ اعْتَكَفَ عِشْرِينَ يَوْمًا [1]

अबू हुरैराहﷺ से रिवायत है:

कि अल्लाह के नबीﷺ हर रमज़ान में दस दिन एतेकाफ़ किया करते थे, लेकिन जिस साल आप की वफ़ात हुई उस साल आप ने बीस दिन का एतेकाफ़ किया| (बुख़ारी: अल एतेकाफ़ 2044)

عَنْ أَنَسٍ قَالَ:

كَانَ النَّبِيُّ ﷺ

إِذَا كَانَ مُقِيمًا اعْتَكَفَ الْعَشْرَ الْأَوَاخِرَ مِنْ رَمَضَانَ

وَإِذَا سَافَرَ اعْتَكَفَ مِنَ الْعَامِ الْمُقْبِلِ عِشْرِينَ

अनस ﷺ फरमाते हैं कि

अलाह के रसूल ﷺ जब मुकीम होते तो रमज़ान के आख़री अशरे का एतिकाफ़ करते थे, और अगर आप (किसी रमज़ान में) सफ़र करते तो अगले साल बीस दिन का एतिकाफ करते |

[1] كانَ إذَا كانَ مُقِيماً اعْتَكَفَ الْعَشْرَ الأَوَاخِرَ مِنَ رَمَضَانَ
وَإِذَا سَافَرَ اعْتَكَفَ مِنَ الْعَامِ المقبل عشرين (حم) عن أنس. [صحيح الجامع ٤٧٧٥] (صحيح)

10. सदक़तुल फ़ित्र के फ़ज़ाइल

अल्लाह के रसूलﷺ ने फ़रमाया:

زَكَاةُ الْفِطْرِ طُهْرَةٌ لِلصَّائِمِ مِنَ اللَّغْوِ وَالرَّفَثِ وَطُعْمَةٌ لِلْمَسَاكِينِ

مَنْ أَدَّاهَا قَبْلَ الصَّلاَةِ فَهِيَ زَكَاةٌ مَقْبُولَةٌ

وَمَنْ أَدَّاهَا بَعْدَ الصَّلاَةِ فَهِيَ صَدَقَةٌ مِنَ الصَّدَقَاتِ

ज़कातुल फ़ित्र रोज़ेदार को लग़्व (बेफ़ायदा) और बेहयाई (के गुनाह) से पाक करने और मिस्कीनों का पेट भरने के लिए मुक़र्रर किया गया है, जिस ने उसे (ईद की) नमाज़ से पहले अदा किया तो वो मक़बूल सदक़ा है और जिस ने उसे नमाज़ के बाद अदा किया तो एक आम सदक़ा है|

(दार कुत्नी, सुनन अल बैहक़ी) रावी: इब्ने अ़ब्बास (सह़ीह़ अल जामे 3570) (सह़ीह़)

ख़ातिमा

अल्लाह के रसूलﷺ ने फ़रमाया:

مَا رَأَيْتُ مِثْلَ النَّارِ نَامَ هَارِبُهَا وَلاَ مِثْلَ الجَنَّةِ نَامَ طَالِبُهَا

मैं ने जहन्नम जैसी कोई और चीज़ नहीं देखी कि उस से भागने वाला सो गया हो, और ना जन्नत जैसी कोई चीज़ देखी जिस का तलब करने वाला सो गया हो|

(तिर्मिज़ी) रावी: अबू हुरैराह (अल मोअ़जमुल अवसत़ लित्तबरानी) रावी: अनस [सह़ीह़ अल जामे 5622] (ह़सन)

रमज़ान के फ़ज़ाइल

माहे रमज़ान में आअ्माल ए सालेहा की इस्तेअ्दाद के लिए एक अहम मुख़्तसर तरबियती कोर्स

तालीफ़
अबू ज़ैद ज़मीर

islamiclectures.net | islamicpdfs.net | abuzaidzameer.com